हिन्दी Hindi هندي

हज व उमराह का जामे मुख्तसर तरीका

मक्का मुकररमाह मे दाखिल होनेपर	-	उमराह(या तवाफेकुदुम)
8 जील हिज्जाह	-	एहराम बाधँले`
		मिना मे ठहरे
9 जील हिज्जाह	-	वुकुफे अरफात
		(बाद मगरिब)मुझदलिफा
10 जील हिज्जाह	-	बडे शैतान को कंकरी मारना
		कुरबानी करना
		हलक करना
		तवाफ़े इफ़ाजह (झियारत)
1, 12, 13 जील हिज्जाह	-	मिना मे ठहरकर शैतानो को कंकरी मारे।
मक्का से वापसी के वक्त	-	तवाफुल वीदा

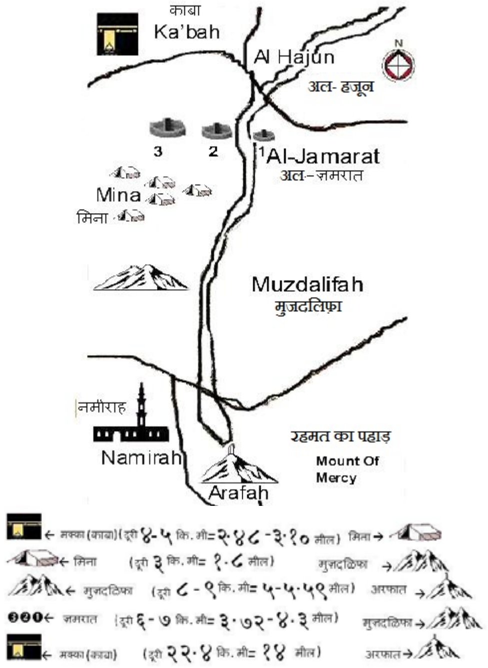

उमराह (तवाफुल कुदुम)

मीकात पहुंच कर एहराम बांधले । उमराह की दुआ

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ بِعُمْرَة

"लब्बइक अल्लाहुम्म बी उमराह"

"ए अल्लाह मै हाजिर हूँ उमराह के साथ।"

अगर उमराह पूरा न करने का खोफ है तो ये दुआ पढ़े –

اللَّهُمَّ مَحِلِّيْ حَيْثُ حَبَسْتَنِي

"अल्लाहुम्म महिल्ली हैसु हबस्तनी"

"एय अल्लाह (अगर मुझे किसीने उमराह करने से रोक दिया)मेरा ठिकाना वही है जहाँ आपने मुकर्रर कर दिया है।"

किबला रूख होकर ये दुआ पढ़े –

اللَّهُمَّ هَذِهِ عُمْرَةٌ لاَ رِيَاءَ فِيْهَا وَلاَ سُمْعَة

"अल्लाहुम्म हाजीही उमराह ला रिया अ फीहा व ला सुमअः"

"एय अल्लाह ये उमराह है, जिस मे कोई दिखलावा नहीं है, और न कोई शोहरत है।"

आवाज से तलबीया पढ़े ।(औरतें आहिस्ता पढ़े) –

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْك، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْك،
إِنَّ الْحَمْدَ وَ النِّعْمَةَ لَكَ وَ الْمُلْكُ لاَ شَرِيْكَ لَك

"लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्ननिअमत लक वल मुल्क ला शरीक लक।"

"एय अल्लाह मैं हाजिर हूँ आपका कोई शरीक नहीं है। मैं हाजिर हूँ बेशक तमाम तारीफे और तमाम नेअमते आप के लिए है और हकुमत सलतनत आपकी है आपका कोई शरीक नहीं है।"

मस्जिदे हराम में दाहने पाँव से दाखिल हो और ये दुआ पढ़े –

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ سَلِّم،
اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِك

"अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहम्मदिव व सल्लीम, अल्लाहुम्म फ तहली अबवाब रहमतीक।"

"एय अल्लाह रहमत नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लमपर ।अय अल्लाह मेरे लिए रहमत के दरवाजें खोल दें।"

मर्द अपना दाहिना कंधा खुला रहने दे| हजर-ए-अस्वद के सामने से पहले इस तरह खड़े होके काबा अपने सामने हो और तवाफ कि नियत करें -अय अल्लाह मै आपकी रज़ा के लिए तवाफ करता हूँ| आप उसको मेरे लिए आसान कर दीजिये और कबूल कर लीजिये| और काली पट्टी पर क़िब्ला रूख खड़े हो कर चक्कर शुरू करने से पहले हजरे असवद की तरफ दाहनी हथेली करके कहे –

اللَّهُ أَكْبَر

"अल्लाहू अकबर" **("अल्लाह सबसे बड़ा है")**

और दोनों हाथ छोड़कर तवाफ शुरू करें। हर जगह शुरू करने से पहले हजर ए असवद की तरफ दाहनी हथेली करें । अल्लाहू अकबर कहें उसको इसतिलाम कहते हैं । पहले तीन चक्करों में मर्द रमल करें । आहिस्ता- आहिस्ता दोडने को रमल कहते है । हर चक्कर में रूकने-यमानी और हजर-ए-असवद के दरमियान ये दुआ पढ़े –

{رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَ فِي الآخِرَةِ
حَسَنَةً وَ قِنَا عَذَابَ النَّار}

"रब्बना-आतिना फिद -दुनिया हसनतव व फिल आखिरती हसनतव वकिना अजाबन्नार ।"

"अय हमारे रब हमे दुनिया में खूबी दें। और आखिरत में खूबी दें और दोजख के अजाब से बचा !"

तवाफ के खतम होने पर अपना सीधा कंधा ढांक लें ओर मकामे ईब्राहीम के पीछे जाकर यह दुआ पढ़े -

{وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى}

"वत्तखिजू मिम्मकामी इब्राहीम मुसल्ला"

"कह दिया के इबराहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ की जगह बनाओ"

मकामे ईब्राहीम के पास तवाफ की दो रकात नमाजे नफल अदा करें । वरना कही भी हरमशरीफ में अदा करें । पहली रकात में कुल या-अय्युहल काफिरून और दुसरी रकात में कुलहुवल्लाहु अहद पढ़े । फिर झमझम के कुएँ के पास जाकर पेट भरकर झमझम पीएँ। और फिर सई करें । सई-सफा से शुरू करें और सई के एक चक्कर की मसाफत आधा किलोमिटर हैं। और कुल मिलाकर सात चकर होते है।यानि साड़े तीन किलोमिटर।

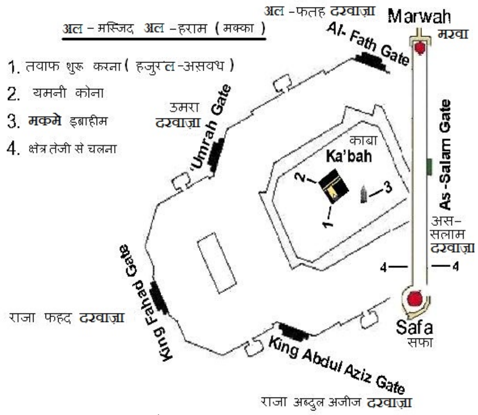

{إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللَّهِ فَمَنْ
حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ
بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْراً فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيْم}

"ईन्नस सफा वल मरवत मीन शआईरिललाह। फमन हज्जल बयत अवि अ त-म-र फला जुनाह अलयहि अय्यत तव्वफ ।बिहिमा वमन ततव्वअ खयरन फईन्नलल्लाह शाकिरून अलीम।"

"बेशक सफा और मरवा अल्लाह की निशानीयों में से है। सो जो कोई बयतुल्लाह का हज या उमराह करें तो उस पर कुछ गुनाह नहीं । के उन दोनो का तवाफ करें ।और जो कोई अपनी खुशी से कुछ नेकी करे तो अल्लाह यकीनन कदरदान और सब कुछ जाननेवाला है ।"

सफा और मरवाह पर हर वक्त काबे की तरफ मुहँ करके ये दुआ पढ़े –

اللَّهُ أَكْبَر، اللَّهُ أَكْبَر، اللَّهُ أَكْبَر
لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَه، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر؛
لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَه، أَنْجَزَ وَعْدَهُ
وَ نَصَرَ عَبْدَهُ وَ هَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَه

"अल्लाहु-अकबर । अल्लाहु-अकबर । अल्लाहु-अकबर । लाई ला ह ईल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु,लहूल मुल्कू वलहुल हम्दु युहयी व युमीतु वहुव अला कुल्ली शयईन कदीर । लाई ला ह ईल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु अन्जझ वअदहु व न-स-र अबदहु व हझमल अहझाब वहदहु।"

"अल्लाह सबसे बडा है। अल्लाह सबसे बडा है। अल्लाह सबसे बडा है।अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं। वो अकेला है।उसका कोई शरीक नहीं। उसी के लिए बादशाहत है। और उसी के लिए तारीफ है।वो जिन्दाह करता है और मौत देता है। उसी के हाथ में तमाम भलाई है। और वो हर चीज पर कादिर है। अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं। वो अकेला है।उसका कोई शरीक नहीं। उसने अपने वादे को पूरा किया।और अपने बन्दे की मदद की और तन्हा एक लश्कर या गिशेह को शिकस्त दे दिया।"

उस को तीन मरतबा पढना है।और सिर्फ पहले और दूसरे मरतबा पढने के बाद दुआ करें। सफा से मरवा(एक चक्कर)और मरवा से सफा(दूसरा चक्कर) उस तरीके से सात चक्कर लगाने है।और मरवा पर चक्कर खत्म होगा। जब हरी बत्ती के पास जाएँगे तो मर्द हजरात दौड़े ।और औरत न दौड़े और ये दुआ करे।

अस-सफा से लेकर अल-मरवा और अल-मरवा से लेकर अस-सफा के दरमियाँ यह दुआ पड़ना जाइज़ है

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَم، إِنَّكَ أَنْتَ الأَعَزُّ الأَكْرَم

"रब्बीग फिर वरहम इन्न-क-अंतल अ अज़्ज़ुल अकरम।"

"अय मेरे रब मेरी मग़फ़ेरत फरमा और मुजपर रहम कर तू सबसे ज़्यादा अझमत वाला और करम करने वाला है|"

मस्जिद से निकलते वक्त बाया पाव निकाले और ये दुआ पढ़ -

بسم الله اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ سَلِّم،
اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِك

" अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीऊँ व सल्लिम, अल्लाहुम्म इन्नी अस अलुक मिन फझलिक।"

"अय अल्लाह रहमत नाज़िल फर्मा मुहम्मद (स.अ.व)पर अय अल्लाह मै तुजसे तेरे फझल का सवाल करता हू।"

फिर आदमी लोग पूरे सर के बाल मुंडाए| या कम से कम पूरे सर के बाल हर जगह से बराबर काटें और औरतें सारे सर के बाल उंगली के एक पोरे की लम्बाई से कुछ ज़्यादा काटें| अब आपका एहराम खुल गया और तमाम पाबंदिया ख़त्म हो गई|

आठ झील हिज्जाह

आठ झील हिज्जाह को मिना फ़जर के बाद जोहर से पहले पहुँचे| एहराम की हालत मे पहुँचे| हज की नियत से एहराम मे दाखिल होवे|(जहाँसे ठहरे हो वहांसे) -

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ بِحَجّ

"लब्बैक अल्लाहुम्म बि हज्ज"

"अय अल्लाह मै हज के लिए हाजिर हूँ।"

अगर हज पूरा न करने का डर हो तो पढ़े –

اللَّهُمَّ مَحِلِّيْ حَيْثُ حَبَسْتَنِي

"अल्लाहुम्म महल्ली हयसु हबस्तनी।"

"अय अल्लाह (अगर मुझे किसीने हज करने से रोक दिया) मेरा ठिकाना वही है जहाँ आपने मुकर्रर कर दिया है |"

किब्ला रुख खड़े हो कर ये दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ حَجَّةٌ لاَ رِيَاءَ فِيْهَا وَلاَ سُمْعَةَ

"अल्लाहुम्म हाज़िही हज्जतुन ला रिया अ फीहा वला सुमअह |"

"एय अल्लाह ये हज है, जिस मे कोई दिखलावा नहीं है, और न कोई शोहरत है।"

तलबिया बा आवाज़ बुलंद पढ़े -

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ،
إِنَّ الْحَمْدَ وَ النِّعْمَةَ لَكَ وَ الْمُلْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ

"लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्ननिअमत लक वल मुल्क ला शरीक लक |"

इसका तर्जुमा पहले से ही मौजूद है |

और यह तलबिया भी पढ़े –

لَبَّيْكَ إِلٰهَ الْحَقِّ

"लब्बैक ईलाहल हक्की "

"मै हाजिर हूँ अल्लाह के सामने जो सच्चाईवाला है |"

मीना में क़याम

मीना की तरफ को जाए | जोहर, असर, ईशा (कसर पढ़े |) फ़जर, मग़रिब सब अपने अपने वक़्त पर पढ़े अलग अलग पढ़े |

नौ जिल हिज्जाह अरफा का दिन

झवाल से गुरुबे आफ़ताब तक अरफ़ात मे ठहरने को वुकुफ़े अरफा कहते है | और ये फ़र्ज़ है।फ़जर की नमाज पढने के बाद इशराक के बाद अरफात की तरफ चले और ये तस्बीहात पढ़े-

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ،
إِنَّ الْحَمْدَ وَ النِّعْمَةَ لَكَ وَ الْمُلْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ

"लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक ,लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक ,इन्नल हम्द वन्ननिअमत लक वल मुल्क ला शरीक लक।"

इसका तर्जुमा पहले से ही मौजूद है |

और अल्लाह की बड़ाई भी बयान करें -

اَللّٰهُ أَكْبَرُ

"अल्लाहू अकबर" **("अल्लाह सबसे बड़ा है")**

फिर अरफात मे झवाल से पहले पहुँचे | अगर मस्जिद नमीरा मे कही जगह न मिले तो अरफात मे किसी भी जगह कयाम करे | अगर मस्जीदे नमीरा मे जगह मिल जाये तो एक अजान और दो इकामत के साथ जोहर और असर की नमाज़ एक साथ अदा करे(कसर) और दोनों नमाजो के दरम्यान कोइ नमाज न पढे इसी तरीके से असर के बाद भी कोइ नमाज न पढे और अगर मस्जीदे नमीरा मे जगह न मिले तो दो अजान और दो इकामत के साथ नमाज़ अपने अपने वक्त पर पढे । जवाल होते ही वुकुफ शुरू करे | और शाम तक लब्बैक कहे खूब दुआ ओर तौबा व इस्तीगफार करने और चोथा कालिमा पढने गिड़ गिड़ा के दुआ माँगने मे वक़्त गुजारें | और वुकुफ खडे होकर करना अफज़ल है | और बैठ कर करना जाइज है | किब्ले की तरफ मुँह करके हाथ उठा कर ये तलबिया पढ़े |

इस दिन की सबसे अफ़ज़ल तस्बीह –

لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ،
وَ لَهُ الْحَمْدُ، وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

"ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीकलहू, लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु युहयी व युमीतु बी यदिहिल खयर वहुव अला कुल्ली शयईन कदीर ।"-

"अल्लाह के सीवा कोई मअबूद नही । वह अकेला है उसका कोई शरीक नही । उसीके लिये बादशाहत है। और उसी के लिये तारीफ़े है । वह जिन्दा करता है और मौत देता है । उसी के हाथ मे तमाम भलाई है । और वह हर चीज़ पर कादिर है ।"

फिर गुरुबे आफताब के बाद तक वहाँ रुके । लेकिन मगरिब की नमाज वहाँ अदा न करे । और मुझदलिफा की तरफ चले ।

वुकुफ़े मुझदलिफा

मुझदलिफा पहुचने पर एक अजान और दो इकामत के साथ मगरीबऔर ईशा की नमाजे कसर पढे । दोनो नमाजो के दरम्यान कोई नमाज नपढे । फिर ईशा की फरज नमाज के बाद मगरीब की दो सुन्नत और ईशाकी सुन्नत और वित्र पढे । दुआओ और ज़िक्र का खूब ऐहतेमाम करे । फिर कंकरीयाँ चुने बडे चने के बराबर 70 (सत्तर) कंकरीयाँ हर आदमी के लिये चुने

दस जील हिज्जाह

फिर सुबह उठकर फजर की नमाज पढे और कीब्ले की तरफ मुँह करते हुए अल्लाह की हम्द करे ।–

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

"अलहम्दु लिल्लाह" - **"तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है |"**

اَللّٰهُ أَكْبَرُ

"अल्लाहु अकबर" - **"अल्लाह सबसे बड़ा है |"**

لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللّٰهُ

"ला ईलाह ईल्लल्लाहु"

"नही कोई मअबूद सिवाय अल्लाह के|"

फिर सूरज निकलने से पहले मीना की तरफ ये तलबिया पढते हुए चले|

बडे शैतान को कंकरी मारना ❸

मुझदलिफा या मीना पहुंच कर जमरतुल उकबा पर सात कंकरीया अलग अलग मारे (जान के ख़तरे के पैशे नझर शाम को या रात मे कंकरीया मारना मुनासिब है ।) कंकरी मारते हुए ये तस्बीहात पढे–

اَللّٰهُ أَكْبَرُ

"अल्लाहु अकबर"- **"अल्लाह सबसे बड़ा है ।"**

शैतान को कंकरी मारते ही लब्बैक कहना बन्द करदे और रमी के बाद दुआ के लिए न ठहेरे । अपने ठिकाने पर चले आए। उस के बाद कुरबानी करे।

कुरबानी

कुरबानी के लिए टिकट खरीदना भी जाईज़ है । अगर टिकट न लिया तो कुरबान गाह की तरफ चले । कुरबानी करते वक़्त ये पढे-

بِسْمِ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ أَكْبَرُ
اَللّٰهُمَّ إِنَّ هٰذَا مِنْكَ وَ لَكَ اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي

"बिस्मील्लाही वल्लाहु अकबर अल्लाहुम्म ईन्न हाज़ा मींक वलक अल्लाहुम्म तकब्बल मीन्नी"

"अल्लाह के नामसे शुरू करता हूँ वो सबसे बड़ा है। अय अल्लाह ये तेरे ही तरफ से है और तेरी ही मिल्कियत है अय अल्लाह तु मुझसे ईस को कुबुल कर ।"

सर के बाल मुंडवाले ✂

कुरबानी हो जाने के बाद सर के बाल मुंडवाले फीर आदमी लोग पुरे सरके बाल मुंडवाए या नही तो पुरे सर के बाल हर जगह से बराबर बराबर कॉटे और औरते आप बाल उंगली के एक पोरे की लम्बाई से कुछ ज्यादा कतरे अब आपका ऐहराम खुल गया और तमाम पाबंदीया खत्म हो गई । सिवाय हमबिस्तरी के| फिर मक्के की तरफ तवाफ़े ज़ियारत के लिए चले |

तवाफ़े ज़ियारत

अब तवाफ़े ज़ियारत करे| उस का वक़्त दस से बारह जिल हिज्जाह के आफ़ताब गुरूब होने तक| दिन मे या रात मे जब चाहे करे |उमुमन ग्यारह जिल हिज्जाह को आसानी होती है|(तवाफ़े जियारत का तरीका वही है जो उमराह के तवाफ का है) और तवाफ वुजू के साथ ही होना चाहिए|। ईस के लिए ऐहराम की जरूरत नहीं है। मस्जिदे हराम मे दाहने पाव से दाखल हो और ये दुआ पढे-

"अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीव व सल्लिम अल्लाहुम्मफतहली अबवाब व रहमतिक।"

इस के बाद तवाफ करे और तवाफ का तरीका पेज नंबर 1 गुज़र चुका है|

नोट: फिर तवाफ के ख़त्म होने पर मकामे इब्राहीम के पास जाकर तवाफ की दो रकात नफील अदा करे| फिर सफा और मरवा के दरमियाँ सई करे| सई का तरीका पेज नंबर 1 पर गुज़र चुका है| अब आपका ऐहराम खुल गया और तमाम पाबन्दीया ख़त्म हो गई । अब आप हम बिस्तरी भी कर सकते है मस्जिद से निकलते वक्त बाया पाव निकाले और ये दुआ पढे

"अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहम्मदिव व सल्लीम अल्लाहुम्म इन्नी अस अलुक मीन फझलिक |"

इस का तर्जुमा एक नंबर पेज पर दुआ पर देखे |

11 और 12 झील हिज्जाह

मिना मे ठहरकर शैतानो को कंकरी मारना ❸❷❶

जवाल के बाद से लेकर रात तक तीनों शैतानो को कंकरीया मारनी है | पहले छोटे शैतान को कंकरी मारते वक़्त –

"अल्लाहू अकबर" **("अल्लाह सबसे बड़ा है")**

यह तस्बीह पढ़े | फिर किब्ले की तरफ मुहँ करके दुआ करे ।फिर दूसरे शैतान की तरफ इसी तरीके सी तस्बीह पढते हुये कन्करीया मारे । इसी तरह काबे की तरफ मुहँ करके दुआ करे ।–

"अल्लाहू अकबर" **("अल्लाह सबसे बड़ा है")**

अब दुआ के बाद तीसरे शैतान को तस्बीह पढते हुये कन्करीया मारे–

"अल्लाहू अकबर" **("अल्लाह सबसे बड़ा है")**

अब दुआ न करे। अब आपको इख़तीयार है के बारवी जील हिज्जाह की सुबह के बाद सुरज गुरुब के पहले मीना छोड़ दे । या तेरवी की रमी करके ही मीना छोड़े

तवाफ़े विदाअ

हज के बाद जब मक्के मे से वतन वापसी का इरादा हो तो तवाफ़े विदाअ वाजीब है ।मस्जिद हराम मे दाहने पाव से दाख़िल हो और तवाफ़े विदाअ करे| तवाफ का तरीका पेज नंबर 1 पर गुज़र चुका है| तवाफ़े विदाअ ख़त्म करे और मकामे इबरहीम के पास तवाफ की दो रकात नमाझे नफ्ल अदा करे । वर्ना हरम शरीफमे कही भी अदा करे । अब आपके हज के अरकान तमाम मुक्कमल हो गए । अब आप अपने वतन के लिए रवाना हो सकते है । मस्जीद से निकलते वक़्त बाया पाव निकाले और ये दुआ पढे–

"अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहम्मदीन व सल्लीम अल्लाहुम्म इन्नी असलोक मीनफझलीक।"

"अय अल्लाह रहमत नाज़िल फरमा हझरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयही व सल्लम पर अय अल्लाह मै तेरे फ़ज़ल का सवाल करता हूँ ।"

हज के सफर मे जाने से पहले सारे कर्झे अदा करदे । बंदो के हुकुक अदा कर ले या माफ करा ले | और वसीयत लिख दे |

ज़्यादा कापी के लिए संपर्क करे:
The Islamic Bulletin, PO Box 410186, San Francisco, CA 94141-0186
USA ♦E-Mail: info@islamicbulletin.org
www.islamicbulletin.org (Enter Here ♦ Hajj ♦ Hindi)